देश में कृषि विश्वविद्यालय

3246. **श्री रामजीलाल:** क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) देश में कुल कितने कृषि विश्वविद्यालय हैं; उनकी स्थापना कब हुई तथा वे कहां-कहां स्थित हैं;

(ख) प्रत्येक कृषि विश्वविद्यालय में क्या-क्या उपलब्धियां हासिल की गई हैं; और

(ग) सरकार ने उत्कृष्ट कार्य निष्पादन वाले विश्वविद्यालयों को किस प्रकार पुरस्कृत किया है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोमपाल): (क) देश में कुल कृषि विश्वविद्यालयों की संख्या, उनकी स्थापना का वर्ष और वे कहां-कहां स्थित हैं का ब्यौरा विवरण—1 में दिया गया है। **(नीचे देखिए)**

(ख) अब तक प्राप्त चार विश्वविद्यालयों की सूचना विवरण-2 में दी गई है। **(नीचे देखिए)** विश्वविद्यालयों से सूचना एकत्रित की जा रही है और जैसे ही वह प्राप्त होगी उसे सदन के पटल पर प्रस्तुत कर दिया जाएगा।

(ग) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् श्रेष्ठ संस्थान का पुरस्कार उसकी अध्यापन, अनुसंधान, प्रसार, नियंत्रण, शैक्षणिक सत्र को कारगर बनाने और सामान्य विषयों में किए गए कार्यों के आधार पर प्रदान करता है। पुरस्कार की राशि एक लाख रुपये है। यह पुरस्कार प्रति वर्ष विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों के निर्धारित मानदण्डों के अनुसार किए गए मूल्यांकन के आधार पर दिया जाता है।

विवरण-1
राज्य कृषि विश्वविद्यालयों की सूची

	राज्य	स्थापना वर्ष
	आन्ध्र प्रदेश	
1.	आन्ध्र प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, राजेन्द्र नगर, हैदराबाद, (आन्ध्र प्रदेश)-500030	1964
	असम	
2.	असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहट (असम)-785013	1969
	बिहार	
3.	राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर (बिहार)-848125	1971
4.	बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, रांची (बिहार)-834006	1982
	गुजरात	
5.	गुजरात कृषि विश्वविद्यालय सरदार कृषिनगर, बनसकंठा (गुजरात)-385506	1972
	हिमाचल प्रदेश	
6.	हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर (हिमालच प्रदेश)-176062	1978
7.	डा० वाई० एस० परमार बागवानी तथा वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन, (हिमाचल प्रदेश)-173230	1985
	हरियाणा	
8.	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)-125004	1970
	जम्मू और कश्मीर	
	शीतकालीन (नवम्बर से अप्रैल)	
9.	शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, रेलवे रोड, जम्मू तवी (जम्मू और कश्मीर)-180004	1982
	ग्रीष्मकालीन (मई से अक्तूबर)	
	शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, शालीमार परिसर, पोस्ट बाक्स-262 श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर)-190001	
	केरल	
10.	केरल कृषि विश्वविद्यालय, वेल्लानिक्काए, त्रिचूर (केरल)-680654	1972
	कर्नाटक	
11.	कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, पोस्ट बैग सं० 2477, बंगलौर (कर्नाटक)-560065	1965
12.	कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)-580005	1986
	महाराष्ट्र	
13.	कोंकण कृषि विद्यापीठ, दपोली (महाराष्ट्र)-415712	1972
14.	महात्मा फूले कृषि विद्यापीठ, राहुड़ी, (महाराष्ट्र)-431722	1969
15.	मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, परभणी (महाराष्ट्र-413722	1972
16.	डा० पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, कृषि नगर, अकोला (महाराष्ट्र) 431402	1969

4334/RS-4A

	राज्य	स्थापना वर्ष
	मध्य प्रदेश	
17.	जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)-482004	1964
18.	इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, कृषि नगर, रायपुर (मध्य प्रदेश)-492012	1987
	उड़ीसा	
19.	उड़ीसा कृषि और प्रौद्योगिकी कृषि विश्वाविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा)-751003	1962
	पंजाब	
20.	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना-141004	1963
	राजस्थान	
21.	राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर-334002	1963
	तमिलनाडु	
22.	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर (तमिलनाडु)-641003	1971
23.	तमिलनाडु पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, मद्रास (तमिलनाडु)-600007	1989
	उत्तर प्रदेश	
24.	चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश)-208002	1975
25.	गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तर प्रदेश)-263145	1960
26.	नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)-224001	1975
	पश्चिम बंगाल	
27.	विधान चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पी० ओ० कृषि विश्वविद्यालय मोहनपुर, नादिया (पश्चिम बंगाल) -741252	1974
28.	पश्चिम बंगाल पशु और मात्स्यिकी विज्ञान विश्वविद्यालय, बैलगछिया, कलकत्ता-37 (पश्चिम बंगाल)	1995
	मानद विश्वविद्यालय	
1.	राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल-132001	1989
2.	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली-110012	1958
3.	भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर-243122	1984
4.	केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा अनुसंधान संस्थान, सात बंग्लो, वरसोवा, मुम्बई-400062	1989
	केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय	
1.	केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल (मणिपुर)-795001	1993

विवरण-2 (I)

डा० जे०एस० भाटिया (ई०पी०डी०) कृपया ध्यान दें।

प्रिय डा० भाटिया,

कृपया राज्य सभा प्रश्न सं०-007131 जिसका उत्तर दिनांक 16.7.1998 को दिया जाना है के संबंध में अपने भेजे गए ई० मेल संदेश का अवलोकन करें। अपेक्षित सूचना निम्नानुसार है:

हरियाणा में कृषि के क्षेत्र में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियां और किया गया योगदान

हरियाणा राज्य को एक प्रमुख राज्य माना जाता है जो भारत में कृषि की उन्नति के लिए प्रतिबद्ध है। इस राज्य की सदैव ही यह रणनीति रही है कि समूची कृषि प्रणाली में फसल की उत्पादकता को बढ़ाया जाए और उसे टिकाऊ बनाया जाए। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा गत 27 वर्षों के दौरान प्राप्त की गई प्रभावशाली उपलब्धियां न सिर्फ बेहतर अनुसंधान और प्रसार का नतीजा है अपितु उसके द्वारा कृषि विभागों के साथ स्थापित किए गए ठोस सम्पर्कों का भी नतीजा है। कम खाद्यान्न का उत्पादन देने वाले राज्य से एक राष्ट्रीय खाद्यान्न भंडार को प्रमुख योगदान देने वाले राज्य के रूप में हरियाणा का उभार एक ऐतिहासिक उभार है। अभी हाल ही में श्रेष्ठ संस्थान का पुरस्कार प्राप्त चौ० च० सि० हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार ने स्वयं को इतना विस्तृत बना लिया है कि वह कृषि और संबंधित क्षेत्रों में अनेक पैकेज प्रदान करता है।

विश्वविद्यालय ने 1970 में अपने प्रारंभ से ही अध्यापन के मामले में अपनी श्रेष्ठ छवि बनाई है। अध्यापन संकाय पूरी तरह से अनुभवी, योग्य और सक्षम

है। विश्वविद्यालय अपने पांच महाविद्यालय जिनमें कृषि महाविद्यालय पशु, चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं नृविज्ञान, गृह विज्ञान, कृषि इंजीनियरी और पशु विज्ञान शामिल है, में 47 विषयों में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाता है। इसके अलावा विश्वविद्यालय ने खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी, मात्स्यिकी एवं एम०बी०ए० में नए पाठ्यक्रम भी आरंभ किए हैं। पाठ्यक्रम गतिविधियां भूमंडलीय प्ररिप्रेक्ष्य में राज्य और देश की जरूरतों के संतुलित विश्लेषण पर आधारित है। प्रत्येक पाठ्यक्रम इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि उसका व्यावहारिक आधार किसानों, निजी एजेंसियों और प्रसार एजेंन्टों के साथ सम्पर्क स्थापित कर खास इंटर्नशिप बना है। विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर छात्रों के मूल्यांकन के लिए विशेषज्ञ सम्पर्कों का नेटवर्क है। हर साल शोध प्रबंधों के सारांश प्रकाशित किए जाते हैं। छात्र कल्याण निदेशालय छात्रों की सहगतिविधियों और उनके काम की पसंद की देखभाल करता है। छात्रों को कृषि आधारित उद्योगों में छोटे उद्यमों का काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

हरियाणा के उत्पादन के आंकड़ों का जायजा लिया जाए तो स्पष्ट होता है कि आधुनिक किस्मों और संबंधित प्रौद्योगिकियों को अपनाने के बाद गत 30 वर्षों के दौरान भिन्न-भिन्न फसलों की पैदावार में 3 से 11 गुनी वृद्धि हुई है। भिन्न-भिन्न फसलों की पैदावार में हुई यह वृद्धि उर्वरकों के उपयोग में हुई 4.5 गुनी वृद्धि से मेल खाती है। इसी अवधि के दौरान प्रति व्यक्ति प्रति दिन दूध की उपलब्धता 352 ग्राम से 620 ग्राम तक बढ़ी है।

हालांकि कृषि कार्य उच्च उपजशील किस्मों और उर्वरकों की खपत पर निर्भर करते हैं परन्तु गए सालों में निर्भरता का स्तर घटा है। वर्ष 1990 के चावल-गेहूं की प्रणाली में उत्पादकता ने कमी के संकेत दिए हैं। कुछ दशक में मामलों में जैसे कपास का उत्पादन नाशीकीटों और रोगों के प्रकोप के कारण कम हुआ है और कीटनाशियों की क्षमता घटी है। ऐसे कुछ मामले जिनमें अनुसंधान क्रियाकलापों और किसानों की सहभागिता को क्षेत्र उन्मुख बनाने की जरूरत है नीचे दिए गए हैं:—

1. वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के बावजूद खाद्यान्नों के मामले में परम्परागत प्रजनन से आशाअनुकूल वृद्धि नहीं हुई है और प्रतिरोध प्रजनन, संकर चावल और आनुवांशिक इंजीनियरी में ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है।
2. पोषण तत्वों के आकर्षण के कारण मिट्टी की उत्पादकता में हुई कमी को कभी भी पोषण निवेशों द्वारा अनुरूप नहीं बनाया गया।
3. राज्य के अधिक उत्पादकता वाले क्षेत्रों में नाशीकीटों, रोगों और खरपतवार का भारी प्रकोप है।
4. सिंचाई जो कृषि बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, खराब रखरखाव के कारण बिगड़ गई है। कुछ क्षेत्रों में जल स्तर बढ़ गया है जबकि कुछ दूसरे क्षेत्रों में खारेपन और क्षारीयता के साथ-साथ जल स्तर कम होने की समस्या बढ़ रही है।
5. विश्व व्यापार संगठन को सौंपे गए कार्यदिशों के आधार पर बदलती हुई प्राथमिकता सहित कटाई बाद की प्रौद्योगिकी और निर्यातपरक विपणन नीतियां।
6. तैयार की जा चुकी किफायती पारिस्थितिक प्रौद्योगिकियों को कृषि में बाजार संबंधी विविधताओं के अनुरूप दुरुस्त करना।

विश्वविद्यालय ने जरूरतों के आधार पर एक कार्यसूची तैयार की ताकि विभिन्न टिकाऊ और उत्पादकता के मुद्दों पर नीतिगत और रणनीतिगत रूपरेखा तैयार की जा सके। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्न मुददों पर जोर दिया है:

1. स्थान विशिष्ट मुद्दों की पहचान कर विभिन्न समस्याओं को प्राथमिकता देना।
2. भावी अनुसंधान के लिए परिकल्पना मुहैया कराने के लिए किसानों के खेतों की नैदानिक निगरानी करना।
3. बहु विषयक विधि की सहायता से विभिन्न घटकों पर खेत में अनुसंधान करना।
4. निवेशों के साथ सार्थक उपयोग की नीति का प्रस्ताव देना ताकि खारापन, जल रुकाव, पोषण तत्वों का ह्रास, कीटनाशियों की प्रतिरोधिता और पर्यावरण में उनके प्रदूषण को रोकने में मदद मिल सके।
5. स्रोतों की आवश्यकता का निर्धारण और एक प्रस्ताव प्रलेख तैयार करना।
6. मौजूदा प्रौद्योगिकियों का उन्नयन करना ताकि देश में वैक्सीन-स्ट्रेनों, पशु रोगजनक कोशिका वंशक्रमों और हाइब्रिडोमा क्लोनों के लिए पश

चिकित्सा टीकों के विकास और टीकों के संग्रहण केन्द्रों की स्थापना की जा सके।

7. फार्मिंग प्रणाली जिसमें शामिल है पशु एवं गृह उत्पाद और ग्रामीण क्षेत्रों में आय बढ़ाने वाली प्रौद्योगिकी।

ह०/-6.7.98
कुलपति के तकनीकी सलाहकार

विवरण-2 (II)

केरल कृषि विश्वविद्यालय
फैक्स संदेश

प्रमुख परिसर, केल्लानिकारा
6.7.1998

सं० जी०ए०/जे०2/23819/93

द्वारा
कुलसचिव

सेवा में
डा० जे० एस० भाटिया,
सहायक महानिदेशक (ई०डी०पी०)
413, कृषि अनुसंधान भवन,
भा०कृ०अ०प०, पूसा
नई दिल्ली-110012

महोदय

विषयः—राज्य सभा प्रश्न संख्या 7131 जिसका उत्तर दिनांक 16.7.1998 को दिया जाना है।

केरल कृषि विश्वविद्यालय को सौंपे गए कार्य हैं:—अधिक पैदावार वाली किस्मों, पशुओं/पक्षियों, मछलियों और उत्पादन वृद्धि के लिए समुन्नत प्रौद्योगिकियों का विकास। सन् 1972 में इस विश्वविद्यालय के प्रारंभ से ही खेती के लिए फसल की 90 किस्में जारी की गई हैं, जो हैं (चावल-35, नारियल-5, काजू-7, काली मिर्च-4, तिल-5, इलाइची-1, हल्दी 2, सब्जियां-19, अन्य फसल-12)।

देशी प्रजातियों के संरक्षण के लिए वाचुर गाय की संकटापन्न प्रजाति, केरल कृषि विश्वविद्यालय द्वारा किये जाने वाले अध्ययन का मुख्य विषय है। घर के पिछवाड़े के आंगन और व्यावसायिक पालन के लिए उपयुक्त मुर्गियों की दो नस्लें—एथुलिन और ग्रामलेखुनी जारी की गई और उन्हें व्यापक रूप से स्वीकार कर लिया गया है।

मात्स्यिकी के क्षेत्र में मैक्रोबैकियम रोजनबर्गी स्वच्छ जल झींगा मछली पालन के लिए प्रौद्योगिकी मानकीकृत की गई है। एक समेकित फसल-मत्स्य-बतख-शूकर प्रणाली को मानकीकृत करने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया गया। यह प्रणाली कुट्टानाड के लिए उपयोगी है।

केरल कृषि विश्वविद्यालय की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि है जलीय खरपतवार सोलविनिया का नियंत्रण जो राज्यव्यापी कठिनाई पैदा करती है।

कृषि इंजीनियरी संकाय द्वारा नारियल की जटा उतारने के लिए एक औजार के डिजाइन तैयार किये गये जिसे "कोरामित्रा" के नाम जाना जाता है और इस औजार को किसानों के बीच बांटा गया।

केरल कृषि विश्वविद्यालय ने अनेक प्रौद्योगिकियां तैयार की हैं जिनका उद्देश्य उत्पादकता में वृद्धि करना और समस्याओं का समाधान करना है। किसानों द्वारा इनकी पुनरावृत्ति और स्वीकार्यता सुनिश्चित करने के बाद (किसानों के खेत पर परीक्षण के माध्यम से) इन्हें कार्य सिफारिशों के पैकेज में कोडिफाई किया गया है। तैयार की गई प्रौद्योगिकियों को समय-समय पर संशोधित किया जाता है और इनको अद्यतन भी किया जाता है। फसलों के मामले में इसका 11 बार संशोधन किया गया है। पशुओं/पक्षियों के मामले में इनका चार बार संशोधन किया गया है।

भवदीय
ह०/-
(कुल सचिव)

विवरण-2 (III)

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर पर संक्षिप्त टिप्पणी

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर की स्थापना 1987 में हुई थी। इस विश्वविद्यालय के मुख्य उद्देश्य हैं—कृषि संकाय, पशु पालन एवं संबद्ध विज्ञान का विकास, कृषि शिक्षा प्रदान करना, मौजूदा और संभावित समस्याओं के समाधान के लिए मौलिक और व्यावहारिक अनुसंधान करना और किसानों में प्रौद्योगिकी को स्थानान्तरित करने की व्यवस्था करना।

शिक्षा:

विश्वविद्यालय के आठ महाविद्यालय हैं जिनमें तीन कृषि महाविद्यालय, दो गृह विज्ञान महाविद्यालय और

एक-एक पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, प्रौद्योगिकी एवं कृषि एवं अभियांत्रिकी और डेयरी विज्ञान महाविद्यालय शामिल हैं। इन महाविद्यालयों में प्रति वर्ष 1,000 छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। विश्वविद्यालय के पांच संकाय हैं—कृषि, कृषि इंजीनियरी, गृह विज्ञान, डेयरी विज्ञान और पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान। दो नए संकाय अर्थात् कृषि व्यापार प्रबंध और खाद्य प्रौद्योगिकी शैक्षणिक वर्ष 1999-2000 से कार्य करना शुरू कर देंगे।

अनुसंधान:

कृषि अनुसंधान निदेशालय अपने दस कृषि अनुसंधान केन्द्रों और इन अनुसंधान केन्द्रों से संबद्ध 15 कृषि अनुसंधान उप केन्द्रों में भिन्न-भिन्न सस्य जलवायुवीय क्षेत्रों में अनुसंधान का कार्य करते हैं। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय अपने किस्म सुधार संबंधी अग्रणी कार्य के लिए भली-भांति जाना जाता है। यहां पर बाजरा, ग्वार, डयूबिन, गेहूं, ज्वार, कपास, तिलहन, दलहन और बीज वाले मसालों में किस्म संबंधी सुधार का कार्य किया जाता है। यहां पर 95 अखिल भारतीय समन्वित प्रायोजनाएं भिन्न-भिन्न परिसरों और अनुसंधान केन्द्रों में कार्य कर रही हैं। विश्वविद्यालय ने अभी हाल ही में मोठ की सुधरी हुई किस्म आर०एम०ओ०-40 जारी की है जो केवल 60-65 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है और 6-9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की औसत पैदावार देती है। इसी प्रकार ग्वार की एम-83 (सब्जी की किस्म), उड़द की आर०बी०यू०-38, चने की आर०सी०वी०-7 (सब्जी की किस्म), कंगनी की एस० आर०-16, बाजरे की आर०एच०बी०-90, कपास की आर०बी०-423 जैसी फसलों की उन्नत किस्मों का विकास किया गया और उनकी पहचान की गई।

पशु धन और पशु चिकित्सा अनुसंधान का कार्य वल्लभ नगर, चन्दन और नौहर परिसर में स्थित तीन पशु धन अनुसंधान केन्द्रों में किया जा रहा है।

प्रसार शिक्षा:

विश्वविद्यालय अपने प्रसार निदेशालय के माध्यम से प्रशिक्षण और दौरा प्रणाली के तहत प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम 23 कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों, खेतिहर महिलाओं और युवा किसानों के लिए भी चलाए जाते हैं। भारत के किसी भी विश्वविद्यालय की अपेक्षा इस विश्वविद्यालय में कृषि विज्ञान केन्द्रों की सबसे अधिक संख्या है। इसके अलावा सूचना के पर्याप्त प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए अग्रिम पंक्ति के प्रदर्शन, कृषक कैम्प भी आयोजित किए जाते हैं ताकि उत्पादकता वृद्धि और ग्रामीण रहन सहन के स्तर में सुधार लाने के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

भारतीय स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर 2 अक्तूबर, 1997 को प्रसार शिक्षा निदेशालय और कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा राजस्थान के 61 गांवों को उनके सम्पूर्ण विकास के लिए अपनाया गया।

कृषि विकास प्रायोजना:

इस विश्वविद्यालय के विभिन्न विकास कार्यों के लिए विश्व बैंक द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त कृषि विकास प्रयोजना के तहत 54.78 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जाएगी। बीकानेर परिसर में 4.25 करोड़ रुपये की लागत से तैयार होने वाले 110 आवासीय मकानों का काम मार्च, 1997 से ही आरंभ हो चुका है। बीकानेर परिसर के बाहर अनुसंधान केन्द्रों/महाविद्यालयों को सुदृढ़ बनाने के लिए 16 परिसरों में निर्माण का कार्य आरंभ हो चुका है जिस पर 15.00 करोड़ रुपये की लागत आएगी। बीकानेर परिसर में कृषि व्यापार प्रबंध, शैक्षणिक स्टाफ महाविद्यालय, स्टेडियम संचार केन्द्र, केन्द्रीय प्रयोगशाला, छात्रावास इत्यादि के निर्माण का कार्य जिस पर 17.29 करोड़ रुपये की लागत आयेगी, शुरू हो चुका है। इस कार्यक्रम के तहत अध्यापन और अनुसंधान का स्तर बढ़ाने के लिए 7.00 करोड़ रुपये के उपकरण प्राप्त किए गए हैं।

बजट:

विश्वविद्यालय का वर्ष 1998-99 का कुल बजट 84.00 करोड़ रुपये आंका गया है जिसे निम्न एजेंसियों द्वारा प्राप्त किया जाएगा:

राज्य सरकार	: 54%
भा० कृ० अ० प०	: 13%
ए०डी०पी०	: 28%
विश्वविद्यालय की आय	: 3%
अन्य	: 2%

ह०/-
(जे०आर० माथुर)
निदेशक (पी०एण्ड एम०)

कृपया ध्यान दें: डा० जे०एस० भाटिया,
सहायक महानिदेशक, भा०कृ०अ०प०

विवरण-2 (IV)

आचार्य एन०जी०रंगा, कृषि विश्वविद्यालय राजेन्द्र नगर, हैदराबाद-500 030

आचार्य एन०जी० रंगा, कृषि विश्वविद्यालय (पूर्व नाम आंध्र प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय) की स्थापना 12 जून, 1964 को हुई थी जिसका उद्देश्य अध्यापन, अनुसंधान और प्रसार को समेकित करना हैं।

इस विश्वविद्यालय से 16,119 स्नातकों, 4636 स्नातकोत्तर और 429 डॉक्टरल छात्रों ने कृषि, पशु चिकित्सा विज्ञान और गृह विज्ञान विषयों में विश्वविद्यालय की परीक्षा पास कर डिग्री हासिल की है, साथ ही 232 छात्रों को कृषि डिप्लोमा दिए गए। विश्वविद्यालयों द्वारा भिन्न-भिन्न फसलों की 258 उच्च उपजशील, उर्वरकों के प्रति प्रतिक्रियाशील, नाशीकीटों और रोगों की प्रतिरोधी किस्मों को जारी किया गया है। इनमें शामिल हैं चावल की दो संकर किस्में (ए पी एच आर-1 और ए पी एच आर-2)। भारत में पहली बार दिसम्बर, 1993 के दौरान जारी की गई और चावल की उष्णकटिबंधीय और गैलमिज प्रतिरोधी किस्म (ककटिया), चावल की बी पी एच प्रतिरोधी किस्म (वज्रम) और उड़द की चर्णी फफूंदी प्रतिरोधी किस्म (कृष्णैया) देश में पहली बार जारी की गई हैं। विभिन्न फसलों के अधीन फसल क्षेत्र के लगभग 50 से 80% इलाके में विश्वविद्यालय द्वारा जारी अधिक पैदावार वाली किस्मों को उगाया जाता है। विश्वविद्यालय द्वारा अनेक अनुकूल सस्य तकनीकों का विकास किया गया जिनकी सहायता से राज्य में उत्पादकता के उच्च स्तर को कायम रखा जा सका है। अनेक फसलों के उत्पादन में राज्य का स्थान पांचवां है। उच्च उपजशील किस्मों को अपनाने के कारण किसानों को हुआ आर्थिक लाभ 1,376 करोड़ रुपये प्रति वर्ष आंका गया है। आन्ध्र प्रदेश के मशहूर ओंगोल और पंजानूर नस्ल के पशुओं को विश्वविद्यालय के चुनिंदा प्रजनन द्वारा संरक्षित किया गया है और उनमें सुधार किया गया है। विश्वविद्यालय की प्रसार गतिविधियों, खेतों पर और खेतों के बाहर प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कृषक विज्ञान वेदिका, किसान मेलों और तेलुगू और अंग्रेजी में प्रकाशित प्रकाशनों के माध्यम से चलाया जाता है।

Central Agricultural University, Imphal

3247. SHRI W. ANGOU SINGH: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether the College of Veterinary and Animal of Science at Mizoram and College of Fisheries at Tripura of the Central Agricultural University, Imphal are functioning now;

(b) if so, what is the staff strength of the college; and

(c) the latest audit reports of the University and action taken thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI SOMPAL): (a) The admission of the students for these colleges started with effect from 1997-98 session and arrangements made for the admission of students in collaboration with the West Bengal University of Animal and Fisheries Sciences, Calcutta and University of Agricultural Sciences, Bangalore with the understanding that these students will shift to their respective places as soon as necessary infrastructure are created at Mizoram and Tripura.

(b) According to EFC Memo, the sanctioned staff strength of Veterinary and Animal Sciences include 64 academic and 88 non-academic staff and 34 academic and 41 non-academic staff in Fisheries College.

(c) Central Agricultural University (CAU) received a copy of the preliminary audit observation as submitted by audit party of the office of Accountant General (AG), Manipur and sent para-wise clarification on the preliminary audit note. The final report is yet to be received from the CAG of India. Processing of any action would arise only after the receipt of final CAG report.

Per Hectare Wheat yield in Maharashtra

3248. MISS SAROJ KHAPARDE: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) what is per hectare yield of wheat in Maharashtra at present and how it compares with national average;

(b) whether Government are aware that Maharashtra has the potential to grow more wheat if proper steps are taken in this regard; and